

Shabar Shakti Path

॥शाबर शक्तिपाठ प्रयोग॥

(दसमहाविद्या संयुक्त दुर्लभ पाठ)



Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

गुरु मंत्र-दीक्षा, समस्या के समाधान एवं कार्य सिद्धि हेतु यज्ञ, पूजा एवं अनुष्ठानादि करवाने के लिये सम्पर्क करें- आचार्य राज वर्मा जी।

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

प्रस्तुत 'श्रीसाबर-शक्ति-पाठ' स्तोत्र का विधिवत् पाठ करने से मनुष्य को मनोवांछित फल प्राप्त होता है। प्रयोग करने से पहले इस दिव्य स्तोत्र के तीन रात्रियों में लगातार १११ पाठ करके सिद्ध कर लेना चाहिये। पाठ के समय अखण्ड ज्योत जलती रहनी चाहिये। धूप-दीप-पुष्प-गन्ध व नैवेद्य अर्पित कर माँ शक्ति में दस महाविद्याओं का पूजनार्चन करें। भगवान् शंकर, मत्स्येन्द्रनाथ एवं गोरखनाथ के साथ अपने गुरुदेव का पूजन कर उनसे शाबरीविद्या में सफलता का आशीर्वाद मांगें। वैदिक, पौराणिक एवं तांत्रिक मन्त्रों की भांति शाबर मंत्र भी पर्वकाल या ग्रहण काल के समय सिद्ध

Shri Raj Verma Ji

Contact- 09897507933, 07500292413

करना लाभकारी होता है। इसके अभाव में अन्य शुभ तिथि या काल में सिद्ध कर सकते हैं।

प्रयोग:-

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु:- नैऋत्य दिशा की ओर मुख करके दो पाठ नित्य करें।

सन्तानसुख प्राप्ति हेतु:- पश्चिम दिशा की ओर बैठकर पांच पाठ तीन मास तक करें।

शत्रुबाधा निवारण हेतु:- उत्तर दिशा की ओर बैठकर तीन दिन सांय काल ग्यारह पाठ करें।

विद्या प्राप्ति एवं परीक्षा में सफलता हेतु:- पूर्व दिशा की ओर मुख करके तीन मास तक ३ पाठ करें।

घोर संकट या राजदण्डभय से मुक्ति हेतु:- मध्यरात्रि में पश्चिम दिशा की ओर नौ दिनों तक २१ पाठ करें।

असाध्य रोग को दूर करने के लिये:- सोमवार को एक पाठ, मंगलवार को तीन पाठ, शुक्रवार का दो पाठ एवं शनिवार को नौ पाठ करें।

व्यापार एवं नौकरी में उन्नति के लिये:- एक पाठ प्रातःकाल और दो पाठ रात्रि में एक मास तक करें।

देवता के साक्षात्कार के लिये:- चतुर्दशी के दिन रात्रि से सुगन्धित धूप एवं अखण्ड दीप के साथ १०० पाठ करें।

स्वप्न में प्रश्नोत्तर एवं भविष्य जानने के लिये:- रात्रि में उत्तर दिशा की ओर मुख करके नौ पाठ करने से उसी रात्रि में स्वप्न में उत्तर मिलेगा। सट्टा या मंदा तेजी के लिये प्रयोग करने पर हानि हो सकती है।

ग्रहपीड़ा एवं दैविकबाधा के निवारण के लिये:- नित्य एक पाठ भक्तिपूर्वक करने से क्रूर ग्रहों की मार से रक्षा होती है, दैवी विघ्न कभी नहीं होते एवं सुख-समृद्धि का स्थायी वास होता है।

विनियोग:- श्रीसाबरशक्ति पाठ भुजङ्ग प्रयात छन्द, भारद्वाज-शक्ति-ऋषिः, श्रीमहाकाली-काल-प्रचण्ड-देवता, ॐ क्रीं काली-शरण-बीज, वायु तत्त्व प्रधान, कलि प्रत्यक्ष भोग-मोक्षदा निशदिन धरे जो ध्यान।

॥ध्यानम्॥

मेघवर्ण शशि मुकुट में, त्रिनयन पीताम्बरधारी।

मुक्तकेशी मदउन्मत्त सिताङ्गी, शत-दल-कमल-बिहारी॥

गङ्गाधर ले सर्प हाथ में, सिद्धि हेतु श्री सन्मुख नाचै।

निरख ताण्डव छवि हँसत, कालिका 'वरं ब्रूहि' उवाचै॥

पाठ प्रार्थना:-

जयजय श्रीशिवानन्दनाथ ! भगवन्त भक्त-दुःख-हारी।
करो स्वीकार साबर-शक्ति-पाठ, हे महाकाल-अवतारी॥

॥साबर शक्तिपाठ आरम्भ॥

ॐ नमो जगदम्बा भवानी, करो सिद्ध कारज महारानी।
त्रिभुवन महिमा तिहारी, जै श्रीजया गगन विहारी॥
तेरे भक्त को दुःख न व्यापे, शाक्त से यमराज भी कांपे।
हनुमत वीर चलें अगुवानी, बायें भैरव हैं महारानी॥
पीछे वीरभद्र जब गरजें, दायें नृसिंह वीर हैं हर्षे।
कलि प्रत्यक्ष प्रभाव तुम्हारा, जो सुमरे दुःख विनसे सारा॥
रक्त-नैनन से प्रगटी ज्वाला, कांप उठे सुरासुर दिग्पाला।
त्राहित्राहि भव दुःखभञ्जन माता, कर जोर कहें सुर सिद्ध विधाता॥
जब-जब धर्म पर सङ्कट आया, उठा त्रिशूल सब दुःख मिटाया।
धर्म सनातन की माँ तुम रक्षक, पामर खल मानव दल भक्षक।

भक्तिपूर्ण हूं शरण तुम्हारी, जय दुर्गे श्यामा शिव की प्यारी॥

श्रीरक्त काली समर्पणम्

.....

ॐ नमो श्रीतारिणी क्लेश-हारिणी, भक्त रक्षक माँ गगन-विहारिणी।

कर खप्पर-खड्ग मुण्ड की माला, पाश गदा है भुजा विशाला॥

मद-भरे नयन त्रिभुवन जन मोहे, पाँयन सुवरन घुंघरु सोहें।

रामरूप तुमने जब धारा, भार भूमि सब असुर संहारा॥

जलसङ्कटहर्ता बुद्धि की दाता, जयजय श्रीताराम्बा माता।

वाहन मयूर कर वीणा बाजे, सामवेद सुन्दर ध्वनि गाजे॥

रूपकालिका घोर भयङ्कर, शाक्त जनों को लगता सुन्दर।

मतवाली हो रण में धावे, दानवदल तोहि देख घबरावे॥

वाहन सिंह चढ़ो अब श्यामा, द्वेषसंहार का बजे दमामा।

उग्र प्यास भैरव की बुझाओ, कला कोटि नरमेध रचाओ॥

उग्र तारा है नाम तिहारा, धूमकेतु बन प्रगटो तारा।

संहार करो कुसृष्टि को काली, जयजय श्रीदुर्गे डमरु वाली॥

नहीं आंच तेरे भक्त को आवे, मदान्ध खलों की सत्ता मिट जावे।

जब भी पाप बढ़ा है जग में, कालीरूप हो मेटा क्षण में॥
भक्तिपूर्ण कहता माँ तुझसे, पाप साम्राज्य उठा भूतल से।
धर्म की जय हो गूंजे नारा, अखण्ड वर्ग धर्म रहे तुम्हारा॥
सत्य की शान्ति ब्रह्मचर्य व्रत, मातृशक्ति से रहे सदा रात।
सहस्र भुजे माँ दुर्गनन्दिनी, शिवा शाम्भवी दुष्ट-धर्षिणी॥
त्रिपुरमालिनी हे विन्ध्यवासिनी, भाल कुअङ्क विधिलेख नाशिनी।
अष्टवीर योगिनी मङ्गल गावें, शक्र तुम्हारा चंवर डुलावें॥
मणिद्वीप में राजभवानी, धन्य-धन्य माँ उमा महारानी।
मुझे जगज्जये ! आशा तेरी, अष्टभुजे ! भाग्य बदल दे मेरा॥
जो सुमरे काली तारा, पाप त्रिपाप भस्म हो सारा।
चरण पाताल शीश कैलाशा, रूप विराट तोड़े यमपाशा॥
अनन्त रूप युग युग में धारे, भक्तजनों के काज संवारे।
त्रिभुवनदानी श्रीनाद-नादिनी, रविशत कोटिप्रभा प्रकाशिनी॥

श्रीतारा समर्पणम्

.....

ॐ नमो श्री षोडशी षण्मुखजननि, सदा बसो मम हृदय वरवर्णिनी।

हूं भक्तिपूर्ण तेरा ही अंशी, वर्द्धित हो यह सत्कुल सद्वंशी।।

श्रीयंत्र राजस्मरण की शक्ति, चरण कमल की माँ दे दो भक्ति।

चक्रत्रिशूल खड्ग कमल धारे, घनगर्जन कर राक्षस मारे।।

अरुण वरुण पद सुन्दर रूपा, ध्यावत जो नर होय सो भूपा।

रवि शशि लज्जित निरख पद-शोभा, सेवे शाक्त हृदय अति लोभा।।

त्रिभुवन-सुन्दरी वयस किशोरा, मोहे शिव ज्यों चन्द्र-चकोरा।

स्तन अमृत रस भण्डारा, पीवत होय बुद्धि बलभारा।।

जेहि पर कृपा तुम्हारी होई, स्तन अमृत पावे सोई।

करुणा-दृष्टि विलोके जोई, विश्व-विख्यात कवि सो होई।।

जो भगवती षोडशी को ध्यावे, अक्षय आयुष यौवन पावे।

निर्द्वन्द्व विमल गति मति दाता, जय श्रीश्यामे! त्रिभुवन
भाग्यविधाता।।

पङ्कज आभा सुगन्ध शरीरा, श्यामगात विविध रङ्ग चीरा।

महिष-मर्दिनी अमित बलशाली, जै-जै सती सिद्धिदा काली।।

आसव पानमत्त अटपट वाणी, शाक्त मण्डल को सुखखानी।

जल-थल-नभ किलोल करन्ती, जय भद्रकाली माँ मम दुःखहन्त्री।
निर्धन सृष्टिगत जो बालक तोरे, उनके शीघ्र बसा दे डेरे।
संसार-इच्छुक जिनका मन, दे दो माँ उन्हें स्त्री-सुत-धन॥
हूँ भक्तिपूर्ण तेरे चरणों का भौंरा, तुमको नैना देखत चहुं ओरा।
भोगमोह से भक्त यह है न्यारा, मन चाहत तब चरण अधारा॥
ब्रह्मवादिनी ब्रह्मज्ञान दे, विमला विमल मति-विज्ञान दे।
सावित्री सर्व शोक-दुःख-हर्ता, मम जीवन धन तू जगभर्ता॥
मम मात-पिता गुरु-बन्धु तुम-पद्मा, तू गौरी सत्-असत्-रूपा माँ।
रत्नद्वीप की तुम महारानी, सिद्धि ऐश्वर्य दो मुझे भवानी॥
जहां जब सुमरूँ प्रकट हो जाओ, उठा त्रिशूल सब विघ्न मिटाओ।
अटल छत्र है राज तुम्हारा, जो सुमरे हो भवसिन्धु के पारा॥

श्रीषोडशी समर्पणम्

.....

ॐ नमो श्रीभुवनेश्वरि परमेश्वरि, श्रीपार्वती माँ राजेश्वरी।
श्रीकामदा कालरात्रि एकवीरा, तेजस्वरूपिणी दुर्धर्ष बलधीरा॥
ऋणनाश कर्त्री श्रीशक्ति तू है, माँ-माँ सुत पुकारे तू किधर है?

सर्वार्थदात्री नाम तेरा जग में, मेरी बार कहां भूली हो जग मे॥
पुत्र हो कुपुत्र पर कुमाता न होवे, श्रीगङ्गा की धारा ज्यों पाप धोवे।
मैं हूं तेरा आशा है सिर्फ तेरी, भला या बुरा हूं पर माँ हो तुम
मेरी॥

खड्ग-खप्पर पाश माला हाथ में, चलता है भैरव तेरे साथ में।
जिधर भी माँ नजर तूने फिराई, वहां ही बटुक जा करता सहाई॥
शाकम्भरी श्रीपूर्णा गिरि-नन्दिनी, परमार्थ-शीले माँ नित्यानन्दिनी।
क्षीरसिन्धु किनारे बजाती हो वेणु, श्रीजयाम्बे तू ही मेरी कामधेनु॥
दारिद्र-महिषासुर ने है घेरा, उठा त्रिशूल दुर्गे ! क्लेश मिटा मेरा।
तू ही हरिहर विरञ्चि रूपशक्ति, जय श्रीश्यामा दे श्री-कीर्ति-भक्ति॥
राजरानी तेरे सिवा कौन दाता, मिटा दे बुरा जो लिखा हो विधाता।
तेरे ही प्रताप से कुबेर धनेश्वर कहलाया, जयति जै श्री
भुवनेमाया॥

श्रीभुवनेश्वरी समर्पणम् (४)

.....

ॐ नमो धूमावती लीलामयी, कलि प्रत्यक्ष तुम हो माहेश्वरी।

जो चन्द्रमण्डल में ध्यान धरते, पा कवित्व मोह सिन्धु से तरते॥
षण्मास जो तेरा स्वरूप ध्याता, पुष्प धन्वी भी उससे हार जाता॥
पद्ममालाएं तेरे चरणों में धरता, विश्वमण्डल का होता वह भर्ता॥

तू ही अनेक रूपों से भासे, जो जान जाये मृत्यु भी नासे।
सिद्धविद्या तू अमृतस्वरूपी, जिसके हृदय में वही है देवरूपी॥

भ्रामरी भद्रिका मङ्गलकारी, जयन्ती जया तुम दुःखहारी।
त्रिगुण से परे है धाम तेरा, सदा ही कल्याण करो माँ मेरा॥
तू ही पूर्णगिरीश्वरी कामेश्वरी, करुणामयी हो श्रीराजराजेश्वरी।
भूति-विभूति-दात्री श्रीसती, भक्तों को देती हो श्री-कीर्ति-गती॥

दिव्य दृष्टि सिद्धैश्वर्यदाता, भक्तिपूर्ण करुं मैं प्रणाम माता।
तेरा ही गुण गाता रहता हूं शक्ति, दयामयी चाहता हूं तेरी भक्ति॥

बिगाड़ो या बनाओ अधिकार तुमको, न होगा जरा भी मलाल
मुझको।

किश्ती ये कर दी माँ तेरे हवाले, चाहे डुबा दे या चाहे बचा ले॥
तमन्नाओं की धूप देता हूं तुमको, तेरे नाम से है इश्क मुझको।
तेरी याद में माँ दिल आंसू बहाता, हठी मुसाफिर राह चलता
जाता॥

पीताम्बरा चाहे जितना सता, कभी न कभी पाऊंगा तेरा पता।
अभयङ्करी हे मणि द्वीप रानी, तेरी सेवा में रत हैं सिद्ध ज्ञानी॥
त्रिशूल खप्पर गले मुण्डमाला, मुक्तकेशी त्रिनयन हैं विशाला।
श्रीखेचरी गन्धर्वलोकदात्री, अष्टाङ्गयोगवक्ता तू श्रीविधात्री॥
पीला कमल सा चरण तेरा, बना है जीवन का आधार मेरा।
तेरी लीला श्री तू ही जाने, भक्त तो यथाशक्ति गुण बखाने॥
कुलाचार से योगी करते हैं पूजा, तू ही तो ब्रह्म न और दूजा।
माँ-पुत्र सबसे बड़ा है नाता, पुत्र हो कुपुत्र न माता कुमाता॥
इतना ही बस मैं जानता हूँ, मानो न मानो मैं मानता हूँ।

श्रीधूमावती समर्पणम् (५)

.....

ॐ नमो श्रीभैरवी भूतेश्वरी, आनन्ददाता त्वं ज्ञानमातेश्वरी।
श्रीवीर विद्या चतुर्भुजा सोहे, पात्र नाग शूल पाश शत्रु मोहे॥
श्मशाने निवासिनी श्यामा दिगम्बरा, माँ भैरवी भक्तपालन तत्परा।
अस्थिमुण्डमाला त्रिनेत्रकराला, चरणों में सोहत गुञ्जमाला॥

मद्मत्त हो तुम खिलखिलातीं, आ सेतु पृथ्वी कांप जाती।
बिगड़ी को बनाता है नाम तेरा, तब पदाम्बुज में लिपटा रहें मन
मेरा॥

संग्राम में जीत पाये वही, जिस पर माँ तेरी छाया रही।
जो हुआ जग में तेरे सहारे, उसका यम भी क्या बिगाड़े॥
मृत्युंजयी तू हृदय में जिसके, काल भी घबराता है उससे।
मारकण्डे पर की तूने मेहर, हो गया उसी क्षण माँ वो अमर॥
हनुमान ने जब स्तुति गाई, पा आशीर्वाद जा लंका जलाई।
मेघनाद ने जब तुझे ध्याया, इन्द्र को जा बांध लाया॥
श्रीत्रिपुराचक्रयज्ञ राम ने रचाया, तेरी कृपा से रावण मिटाया।
श्री तत्त्वागम जो नित्य ध्याता, कलि में वही भोगमोक्ष पाता॥
बिन्दु शक्ति शिव पृथ्वी को, भैरवरूप हो पावे।
पाप पुण्य से निर्द्वन्द्व होवे, नित्यानन्द पद जावे॥
चक्रयोग का विषय है, मैथुन पात्र आनन्द।
जो समझें शिवरूप वे, नहीं तो पामर वृन्द॥
विद्या साधन अगम है, चलना तलवार की धार।
गुरु कृपा से सफलता, वरना टुकड़े होंय हजार॥

दिगम्बरा विपरीत रति ध्यावे, या हो अमर या नरक में जावे।

कुलपथ अमृतमय धारा, जिसमें कापालिक करें विहारा॥

भैरवी भूतनाथ जपता जो नर, वाञ्छित सिद्धि हो सत्वर।

श्रीमहाभैरवी समर्पणम्

.....

ॐ नमो श्रीबगलामुखी स्वरूपा, शत्रुसंहार करो देवि! अनूपा ।

चरण तेरे कोमल कमल जैसे, जिसके हृदय में वही देव जैसे ॥

दुःख-शुम्भ ने आ घेरा है मुझको, मिटा क्लेश मैया भक्त कहे
मुझको।

पीताम्बरा श्रीअपराजिता तू कहाई, जभी भक्त सुमरे तू करती सहाई
॥

गदा-चक्र-पाश-शङ्ख हाथों सोहे, चतुर्भुज रूप तेरा शिव को मोहे ।

योग-दीक्षा-हीन को न होता ज्ञान तेरा। पूर्णाभिषिक्त भी न जान
पायें धाम तेरा॥

जिस पर तेरी कृपा हो वही गुणगान करता। दम्भी तंत्र साधक
क्लेशित होके मरता॥

तेरे अनन्त रूपों ने की भक्त रक्षा। तेरे वीरभद्र सुत ने मारा था
दक्षा॥

कलि में महिमा मयि ! व्यर्थ हैं कर्म सारे। भक्तिपूर्ण हो जै-जै
जयाम्बा पुकारे॥

तमप्रबलयुग में भ्रमित हैं कर्मकाण्डी। शुष्क वेदान्त छांटें बकवत
त्रिदण्डी॥

वाक् मनो काय निग्रह कोई न करते। गृह सदृश पलंग पर
फल-फूल चरते॥

जिधर देखा उधर ही सभी ब्रह्मवक्ता। उपासना बिन स्वरूप ज्ञान
कैसा॥

आहार निद्रा पटु पृथ्वीजलचारी, कैसे हों माता सहस्रार-विहारी।
कहते कपिल सहस्रार हो आये। ईश्वर समशक्तिप्रतिभा को पाये॥

नाभिचक्र तक योगी जाता, अष्टसिद्धि गुण प्रगट हो जाता।

अनाहत प्रकाश प्रत्यक्ष हो जाये, सहस्र वर्ष आयु वह पाये॥

मैं तो स्वाधिष्ठान तक आया, अति अद्भुत देखी तेरी माया।
मानसरोवर त्रिकोण दिव्य सुन्दर, श्रीधाता शारदा बैठी हैं कमल पर॥

भुजङ्ग स्वर्णमयी महाकामस्वरूपा, नतमस्तक हो पूजत सुरभूपा।

गायत्री प्रकृति श्रीयंत्र मनोहर, श्रीशुभ्रज्योत्स्ने विश्वमोहन कर॥

राजराजेश्वरी अमित बलशाली, सर्वार्थपूर्णकरी श्री हंसकाली।
श्रीदिव्य सिद्धधाम गुरुरूपधरी, जय श्रीबगला शाक्त मनोरथ पूर्णकरी॥

जिह्वा पकड़कर गदा उठाये, पाश डाल शत्रु को मिटाये।
उन्मत्त नेत्र बक वाहन सुहाये, भक्त रक्षा हेतु शीघ्र ही धाए॥
सिद्धविद्या श्री स्तम्भिनी मङ्गला, करो त्राण मम भीमा चञ्चला।
त्र्यक्षरी मंत्रमूर्ति माँ माहेश्वरी, कलि-प्रत्यक्ष फलदा तू परमेश्वरी॥
भुक्ति-मुक्तिदा भक्त-शरण्ये, नमामि भजामि श्रीगिरिराजकन्ये।
श्रीचक्रराजशक्ति तुम कहातीं, विधि का लिखा कुअक्षर मिटातीं॥
सिद्धभक्ति पूर्ण को है विश्वास तेरा, ब्रह्मास्त्र मंत्र रूप है आधार
मेरा ।

लोकलाज प्रपञ्च कर्म त्यागा, श्रीबगला चरण कमल मन लागा॥

श्रीबगला समर्पणम्

.....

ॐ नमो श्रीत्रिपुरसुन्दरी-चरणं, ब्रह्मादि सेवित दारिद्र्य-हरणम्।

बुद्धदेव वन्दित दयासागरी, वज्रयानवर्ग पूज्ये श्रीकामेश्वरी॥

अमृतपात्र पद्मइक्ष धनुर्बाणहस्ता। ताम्बूल पूरितमुखी श्रीस्वानन्दमस्ता॥

तृतीयावरण में बाला कहाई, शरण मैं तेरी करो माँ सहाई॥

त्रिपथगा त्रिवर्णाराध्य शक्ति, श्रीसुन्दरी दे पद कमल भक्ति।

क्रम दीक्षाचार वर्णित श्रीभवानी, हे कुरङ्गनेत्री तू सर्वसुखदानी॥

पद्मावती सर्वाकर्षिणी कुरुकुल्ला, देखता हूं तू ही है अहिल्या।

कामेश्वरप्रिया आद्या श्रीप्रसूता, पालन करती है तू विश्वभूता॥

श्रीशताक्षरी दिव्यकादिहादि मूर्ति, रहस्यार्थपूर्णे ! तुम हो सर्वपूर्ति।

अभिनव गुप्तसुपूजित माहेश्वरी, सिद्ध नागार्जुन वन्द्य वागेश्वरी॥

धाता हरि रुद्र शासनकरी, जयति जय श्रीअभयङ्करी।

पञ्चप्रेतासन आरुढ़ा तू अम्बा, बिन्दुमालिनी जयजय सिद्धाम्बा॥

कर्पूर गौर वर्णा श्रीकाकिनी, श्रीचक्रेश्वरी मदनातुरा लाकिनी।

श्रीललिता लक्ष्मी कामबीजरूपा, करें प्रदक्षिणा ऋषि-देव-यक्ष-भूपा॥

राजराजेश्वरि तू ही अन्नपूर्णा, श्रीपीठाधीश्वरी सर्वाभीष्ट-तूर्णा।

अर्बुदाचल में अम्बिका कहाई, अष्टभुजा सिंहवाहना कहाई॥

नीलवस्त्र धारो सुकुमारी, जयति जयाज्ञा चक्रविहारी।

अनङ्ग मेखला है तेरा नाम, श्रीचक्रराज प्रतिबिम्ब मयधाम॥
तू धरा धैर्य धर्म कर्म स्मृति, भक्तों को देती भोग और सद्गति।
देखे चरण तेरे परमेश्वरी, हो गया तभी मुक्त श्रीमाहेश्वरी॥
पञ्चानन-प्रिया दुर्गमार्थदात्री, दुर्गतोद्धारिणी तुम हो विधात्री।
वारुणीप्रिया मद्मत्तहासिनी, जयहेम कूटशिखरे विलासिनी॥
चन्द्रबिम्बे प्रभा तू चतुर्वर्ग-फलदा, एकवीरा अर्पणा श्रीकामदा।
महाविद्या स्वयम्भू श्रीसुधा, त्रिभुवनवशङ्करी हे रत्नसुविधा॥
माया नृत्य प्रवीणा गङ्गे नर्मदे, तू ही है सरस्वती विप्र वरदे।
काव्य-छन्द-गति ऋद्धि सन्माति, शाक्त सेवित श्रीवामा त्रिमूर्ति॥
रत्नहार-भूषित नित्य यौवनजया, भक्त को सदा दो अभय विजया।
मधुमती-कला श्रीपार्वती सती, रहूं तेरे प्रताप से मैं सत्यव्रती॥
निर्मला राधिका तू ही कालिका, है तेरा ही रूप तो हरबालिका।
कभी न विचलित हो मति मेरी, रहे सदा मुझ पर कृपादृष्टि तेरी॥

श्रीत्रिपुराम्बा समर्पणम्

.....

ॐ नमो देवि ! मातङ्गी-पादारविन्दा, रक्ष-यक्ष-सेवित महाकवीन्द्रा।
चतुर्भुजा चण्ड-क्लेश-पाप-हन्त्री, भक्तजनों की सदा जयकरन्ती॥
शुकक्रीड़ा मग्न-स्मित-मुखी, शीघ्र तेरा भक्त होता सुखी।
चतुर्विंशतिदल पर करे निवासा, धरे ध्यान होते छिन्न सभी पाशा॥
नादगर्भा नारायण-पूजिता शुभा, मङ्गला भद्रा भक्तकल्पसुधा।
रामेश्वरी रुद्रप्रिया श्रीरागिनी, स्वर्णद्युति-कुञ्जिका विन्ध्यवासिनी॥
हेमवज्रमाला-धारिणी श्रीरति, तेरे प्रताप से होऊं पृथ्वीपति।
संग्रामक्षेत्र में तू रमा करती, प्रगट हो भक्तों के सङ्कट हरती॥
शार्दूल-वाहना गले शङ्खमाला, प्रज्वलित नेत्रा पीती हो हाला।
गन्धर्व-बालाएं करती गुणगान, तेरे ही भक्त माँ धाता चक्रवान्॥
सूर्यचन्द्र वह्नि रूप नेत्र तेरे, रहें सहायक सर्वदा माँ मेरे।
जब भी सुमरुं हरो कष्ट मेरा, श्रीजयाम्बे मुझे तो आधार तेरा॥
हे नागलोक पूज्या प्राणदाता, भक्तिपूर्वक करता नमस्कार माता।

श्रीमातङ्गी समर्पणम्

.....

ॐ विष्णुप्रिया दिग्लस्था नमो, विश्वाधार-जननि कमलायै नमो।
बीजाक्षरों की तुम्हीं सृष्टि करतीं, चरणशरण भक्त के कलेश हरतीं॥
सिन्धु कन्या मायाबीज काया, मोहपाश से जग को भ्रमाया।
योगी भी हुए हैं हैरान तुमसे, कराओ अन्तर्बहिर्याग नित्य मुझसे॥
न करता हूं जाप पूजा मैं तेरी, इतना ही जानता हूं माँ तू मेरी।
पद्म-चक्र-शङ्ख-मधु-पात्र धारे, विकट वीर योद्धा तूने संहारे॥
श्रीअपराजिता वैष्णवी नाम तेरा, माँ एकाक्षरी तू आधार मेरा।
तू ही गुरुगोविन्द करुणामयी, जै-जै श्रीशिवानन्दनाथ लीलामयी॥
ऐरावत हैं शुण्डाभिषेक करते, दे प्रत्यक्ष दर्शन हे विश्वभर्ते।
योग-भोगदा रमाविष्णुरूपा, मेरी कामधेनु कामस्वरूपा॥
सिद्धैश्वर्यदात्री हे शेषशायी, करे दास बिनती करो माँ सहाई।
पद्मा चंचला श्रीलक्ष्मी कहाई, पीताम्बरा तू गरुड़वाहना सुहाई॥
त्रिलोक-मोहनकरी-कामिनी, जयति जय श्रीहरि-भामिनी।

रुक्मिणी राज्ञी अर्थक्लेशत्राता, जय श्रीधनदात्री विश्वमाता॥

महालक्ष्मी लक्ष्मणा श्यामलाङ्गी, पद्मगन्धा श्रीकोमलाङ्गी।
कालिन्दि कमले कर्मदोष-हन्त्री, सुदर्शनीया ग्रीवा में माला वैजन्ती॥

श्रीमहालक्ष्मी समर्पणम्

.....

गदा-खड्ग-खेट-खप्पर-नाग-चक्र-शूल-शङ्ख पात्र हाथों में सोहे।
जय महिषासुर मर्दिनी चण्डिके, अष्टादश भुजे विश्वम्भर मन मोहे॥
शाकम्भरी दुर्गा दुर्गमा कहलाती, भक्तरक्षा हित प्रगट तू हो जाती।
अमृतदायिनी श्रीश्यामा सहोदरी, विद्युत्प्रभे तू सर्वाथ-पूर्ण-करी॥
श्रीइन्द्राक्षी मणिद्वीपे राजरानी, जयति जय त्रिभुवन-विख्यातदानी।
सर्वमुद्रामयी खेचरी भूचरी, कुलजा कौलनी माधवी चाचरी॥
अगोचरी हो तुम कुलकमलिनी, सहस्रार-शक्ति अर्द्धनारीश्वरी।
इच्छा-क्रिया-ज्ञान-मूर्ति मातेश्वरी, श्रीविद्या तत्त्वमाता परमेश्वरी॥
भवानी भगमालिनी हेमगर्भा-परा, सद्सत अद्वैत-जननी ऋतम्भरा।
अहंकार प्रकृतिस्वरूप-यजना, ब्रह्मजननी वेदमाता गगन-वसना॥

चतुष्पष्टि तन्त्रागम-यामला, इनसे भी परे हो तुम चित्कला।
मातृका वह्निरन्तर्याग-माया, सिद्ध-सनकादि ने भी न भेद पाया।।
चक्रवेध से भी परे है धाम तेरा, नम्रदिव्यभावी हृदय में वास तेरा।
मैं दीन भक्त तुम्हें कैसे मनाऊं, दे चरण-भक्ति सदा गुण गाऊं।।
श्रीविन्ध्येश्वरी अजावर-वर्णिनी, तैजसतत्त्वश्यामे तू अति गर्विणी।
आद्या अम्बिका तू है श्रीसुन्दरी, चन्द्रभगिनी हेमवदना किन्नरी।।
तू ही तू है माँ व्याप्त जग में, सर्वत्र तुमको ही देखता हूं मग मे।
पाप पुण्य से परे मैं हूं तेरा, श्रीजयाम्बे मां ! तू मेरी मैं तेरा।।
महाकाल से वचन से भूतल पर आया, तू शरीरी मैं हूं तेरी छाया।
तेरे ही बल से साबरी छन्द कहता, सर्वशक्तिदायी शत्रुवंशहन्ता।।
तीन मासे ध्यावे दर्शन पावे, वाद-सम्वाद में सुरगुर को हरावे।
साबरी-शक्ति-पाठ-वशी सुरेशा, सर्वसिद्धि पावे साक्षी हों महेशा।।
त्रिवर्ण के ही लिये साबरी यह, म्लेच्छ जो पढ़े तो निर्वश हो वह।
साबरी अधीन हैं वीर हनुमान, उठो-उठो सियाराम की आन।।
अञ्जनिसुत सुगीव के सङ्गी, करो काम मेरा वीर बजरङ्गी।
तीन रात्रि में सिद्ध कर कामा, शपथ तोहे रघुपति की बलधामा।।

अष्टभैरव रक्षण करें तन का, वीरभद्र विकास करें मन का।
नरसिंह वीर मम नेत्रों में रहना, जहां पुकारु सम्मोहित करना॥
सिद्ध साबरी है श्यामा का बाण, रुद्र पाठ हरे शत्रु का प्राण।
निशा साबरी श्मशान में गावे, नक्षत्र पाठ जाग्रत हो जावे॥

वर्ष एक जो पढ़े तट गङ्गा, अर्द्धरात्रि में होकर असङ्गा।

ताके सङ्ग रहें भैरवनाथा, राजा-प्रजा झुकावें माथा॥

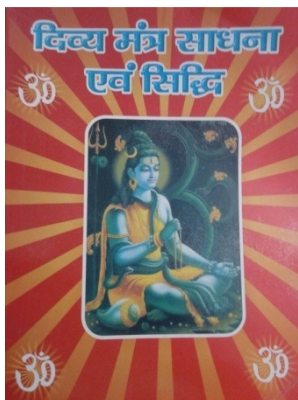
बारह वर्ष रटे साबरी हो ज्ञानी, सदा सङ्ग में रहें भवानी।
हो इच्छा-जीवी योग-गति-ज्ञाना, निष्प्रयास प्राप्त हों सकल विज्ञाना॥
कहे सिद्धिराज भक्त सुनो माँ काली ! शाबरी-शक्ति तुम्हीं हो कराली
।

शाबरी पाठ निन्दा जो करे, होय निर्वश तन कीड़े पड़े॥
शाक्त-रक्षिणी मम शत्रु-भक्षिणी, श्रीरक्त कालि ! सब भयदुःखहरिणी।
सिद्धिभक्त यह चरणों में तेरे, कल्याण करो मेरा बार-बार टेरे॥

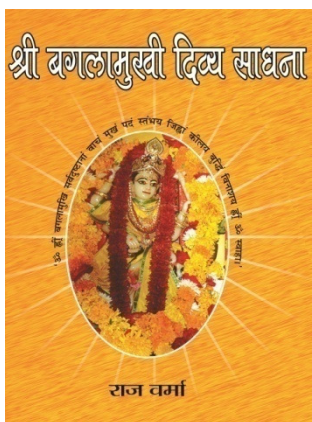
श्रीचण्डी समर्पणम्

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi



- Shri Baglamukhi Divya Sadhana



To purchase these books contact to Hari Publications on given numbers. **Mob- 09027154151, 09897035137**